पाठ 4. परिश्रम

पाठ का परिचय

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हें सफलता मिले तो परिश्रम करो। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। उद्यमी ही जीवन में सदैव सफल होते हैं। मन में केवल इच्छा करने वाले कभी सफल नहीं होते। जिस प्रकार छोटे से बीज से बड़ा-सा वृक्ष प्राप्त होता है उसी प्रकार परिश्रम रूपी बीज से यश रूपी फल प्राप्त होता है। इस धरती पर सजीव व निर्जीव सभी किसी न किसी प्रकार का उद्यम करते हैं। इसलिए मानव जन्म पाकर भी यदि पुरुषार्थ नहीं किया तो यह जीवन ही बेकार है। परिश्रम ही वह गुण है जो विद्यार्थी को एक आदर्श विद्यार्थी बनाता है। चलते ही चलो, चलते ही चलो, चलना ही जीवन है और रुकना है मौत। आदर्श विद्यार्थी को अपने जीवन का मूल लक्ष्य कर्म को ही मानना चाहिए। विद्यार्थी जीवन में कभी भी सुख की कामना नहीं करनी चाहिए तभी वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। भाग्य पर निर्भर रहने वाला विद्यार्थी सदैव असफल ही रहता है। अत: अपने इस स्वर्णिम जीवनकाल का लाभ उठाते हुए भाग्य का निर्माण करो। इस पाठ में लेखक ने सोमनाथ तथा गारफ़ील्ड का उदाहरण देकर हमें यही समझाने का प्रयत्न किया है।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पाठ का आदर्श वाचन करें। पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। पाठ में आई कठिन पंक्तियों का आशय स्पष्ट करें। पाठ को पढ़ाते समय बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए छोटी-छोटी कथाओं को भी सुनाएँ, ऐसी कथाएँ जो परिश्रम के महत्व को उजागर करती हों। पाठ का वाचन बच्चों से भी करवाएँ। बच्चों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

परिश्रम के महत्व को समझो। मानव जीवन के महत्व को समझते हुए इसका सदुपयोग करो। दृढ़ निश्चय व कठिन परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। अडिग रहते हुए जो कर्म करोगे वही तुम्हें सफलता दिलाएगा।

महत्वपूर्ण चर्चा

परिश्रम के महत्व पर बच्चों के साथ चर्चा करें –

- क्या परिश्रम सदैव सफलता दिलाता है?
- क्या अपने जीवन में तुमने ऐसा अनुभव किया है?
- क्या कभी इसके नकारात्मक प्रभाव को भी तुमने अनुभव किया है?
- अपने मित्र से क्या कभी इस विषय पर चर्चा की है?
- आदर्श विद्यार्थी बनने के लिए परिश्रम कितना आवश्यक होता है?